Ecc

Chapter 2

Hindi Interlinear

Reference: Hindi Easy-to-Read Version

1

Hebrew	Hindi	Strong's
אָמַרְתִּי	मैंने-कहा	H0559
אֲנִי	मैंने	H0589
בְלִבִּי	अपने-मन-में	
לְכָה־	आ-	H3212
נָּא	अब	H4994
אֲנַסְּכָה	मैं-परखूँगा-तुझे	H5254
בְשִׂמְחָה	आनन्द-से	H8057
וּרְאֵה	और-देख	H7200
בְטוֹב	भलाई-में	
וְהִנֵּה	और-देखो	H2009
גַם־	भी-	H1571
הוּא	यह	H1931
הָבֶל׃	व्यर्थता	H1892

मैंने अपने मन में कहा, “मुझे मनो विनोद करना चाहिए। मुझे हर वस्तु का जितना रस मैं ले सकूँ, उतना लेना चाहिए।” किन्तु मैंने जाना कि यह भी व्यर्थ है।

2

Hebrew	Hindi	Strong's
לִשְׂחוֹק	हँसी-के-विषय-में	H7814
אָמַרְתִּי	मैंने-कहा	H0559
מְהוֹלָל	पागलपन	
וּלְשִׂמְחָה	और-आनन्द-के-विषय-में	H8057
מַה־	क्या-	H4100
זֹּה	यह	H2090
עֹשָׂה׃	करती-है	

हर समय हँसते रहना भी मूर्खता है। मनो विनोद से मेरा कोई भला नहीं हो सका।

3

Hebrew	Hindi	Strong's
תַּרְתִּי	मैंने-खोजा	H8446
בְלִבִּי	अपने-मन-में	
לִמְשׁוֹךְ	खींचने-को	H4900
בַּיַּיִן	दाखमधु-से	H3196
אֶת־	—	H0853
בְּשָׂרִי	अपने-शरीर-को	H1320
וְלִבִּי	और-मेरा-मन	
נֹהֵג	चलाता-था	
בַּחָכְמָה	बुद्धि-से	H2451
וְלֶאֱחֹז	और-पकड़ने-को	H0270
בְּסִכְלוּת	मूर्खता-में	
עַד	जब-तक	H5704
אֲשֶׁר־	कि-	
אֶרְאֶה	मैं-देखूँ	H7200
אֵי־	कहाँ-	H0335
זֶה	यह	H2088
טוֹב	भलाई	
לִבְנֵי	पुत्रों-के-लिए	
הָאָדָם	मनुष्य-के	H0120
אֲשֶׁר	जो	
יַעֲשׂוּ	वे-करें	
תַּחַת	नीचे	H8478
הַשָּׁמַיִם	आकाश-के	H8064
מִסְפַּר	गिनती	H4557
יְמֵי	दिनों-की	H3117
חַיֵּיהֶם׃	उनके-जीवन-के	

सो मैंने निश्चय किया कि मैं अपनी देह को दाखमधु से भर लूँ यद्यपि मेरा मस्तिष्क मुझे अभी ज्ञान की राह दिखा रहा था। मैंने यह मूर्खता पूर्ण आचरण किया, क्योंकि मैं आनन्द का कोई मार्ग ढूँढना चाहता था। मैं चाहता था कि लोगों के लिये अपने जीवन के थोड़े से दिनों में क्या करना उत्तम है, इसे खोज लूँ।

4

Hebrew	Hindi	Strong's
הִגְדַּלְתִּי	मैंने-बड़े-किए	H1431
מַעֲשָׂי	अपने-कार्य	H4639
בָּנִיתִי	मैंने-बनाए	H1129
לִי	अपने-लिए	
בָּתִּים	घर	
נָטַעְתִּי	मैंने-लगाए	H5193
לִי	अपने-लिए	
כְּרָמִים׃	दाख-की-बारियाँ	H3754

फिर मैंने बड़े—बड़े काम करने शुरू किये। मैंने अपने लिये भवन बनवाएँ और अँगूर के बाग लगवाए।

5

Hebrew	Hindi	Strong's
עָשִׂיתִי	मैंने-बनाए	
לִי	अपने-लिए	
גַּנּוֹת	बगीचे	H1593
וּפַרְדֵּסִים	और-उपवन	H6508
וְנָטַעְתִּי	और-मैंने-लगाए	H5193
בָהֶם	उनमें	
עֵץ	पेड़	H6086
כָּל־	सब-	H3605
פֶּרִי׃	फल-के	H6529

मैंने बगीचे लगवाएँ और बाग बनवाए। मैंने सभी तरह के फलों के पेड़ लगवाये।

6

Hebrew	Hindi	Strong's
עָשִׂיתִי	मैंने-बनाए	
לִי	अपने-लिए	
בְּרֵכוֹת	तालाब	H1295
מָיִם	पानी-के	H4325
לְהַשְׁקוֹת	सींचने-के-लिए	H8248
מֵהֶם	उनसे	H1992
יַעַר	जंगल	
צוֹמֵחַ	उगते-हुए	H6779
עֵצִים׃	पेड़ों-का	H6086

मैंने अपने लिये पानी के तालाब बनवाए और फिर इन तालाबों के पानी को मैं अपने बढ़ते पेड़ों को सींचने के काम में लाने लगा।

7										
קָנִ֙יתִי֙	עֲבָדִ֣ים	וּשְׁפָח֔וֹת	וּבְנֵי־	בַ֖יִת	הָ֣יָה	לִ֑י	גַּ֡ם	מִקְנֶה֩	בָקָ֨ר	וָצֹ֤אן
मैंने-खरीदे	दास	और-दासियाँ	और-पुत्र-	घर-के	थे	मेरे	भी	पशु	गाय-बैल	और-भेड़-बकरी
H7069	H5650	H8198			H1961		H1571	H4735	H1241	H6629

הַרְבֵּ֣ה	הָ֣יָה	לִ֔י	מִכֹּ֥ל	שֶׁהָי֖וּ	לְפָנַ֥י	בִּירוּשָׁלִָֽם׃
बहुत	थे	मेरे	सबसे-अधिक	जो-थे	मुझसे-पहले	यरूशलेम-में
	H1961		H3605	H1961	H6440	H3389

> मैंने दास और दासियाँ खरीदीं और फिर मेरे घर में उत्पन्न हुए दास भी थे। मैंने बड़ी बड़ी वस्तुओं का स्वामी बन गया। मेरे पास झुंड के झुंड पशु और भेड़ों के रेवड़ थे। यरूशलेम में किसी भी व्यक्ति के पास जितनी वस्तुएँ थीं, मेरे पास उससे भी अधिक वस्तुएँ थीं।

8								
כָּנַ֤סְתִּי	לִי֙	גַּם־	כֶּ֣סֶף	וְזָהָ֔ב	וּסְגֻלַּ֥ת	מְלָכִ֖ים	וְהַמְּדִינ֑וֹת	עָשִׂ֨יתִי
मैंने-इकट्ठा-किया	अपने-लिए	भी-	चाँदी	और-सोना	और-खजाना	राजाओं-का	और-प्रदेशों-का	मैंने-प्राप्त-किए
H3664		H1571	H3701	H2091	H5459	H4428	H4082	

לִ֜י	שָׁרִ֣ים	וְשָׁר֗וֹת	וְתַֽעֲנוּגֹ֛ת	בְּנֵ֥י	הָאָדָ֖ם	שִׁדָּ֥ה	וְשִׁדּֽוֹת׃
अपने-लिए	गायक	और-गायिकाएँ	और-विलास	पुत्रों-के	मनुष्य-के	रखैल	और-रखैलें
	H7891	H7891	H8588		H0120	H7705	H7705

> मैंने अपने लिये चाँदी सोना भी जमा किया। मैंने राजाओं और उनके देशों से भी खजाने एकत्र किये। मेरे पास बहुत सी वेश्याएँ थीं।

9									
וְגָדַ֣לְתִּי	וְהוֹסַ֔פְתִּי	מִכֹּ֥ל	שֶׁהָיָ֛ה	לְפָנַ֖י	בִּירוּשָׁלִָ֑ם	אַ֥ף	חָכְמָתִ֖י	עָ֥מְדָה	לִּֽי׃
और-मैं-बड़ा-हुआ	और-मैंने-बढ़ाया	सबसे-अधिक	जो-थे	मुझसे-पहले	यरूशलेम-में	भी	मेरी-बुद्धि	बनी-रही	मेरे-साथ
H1431	H3254	H3605	H1961	H6440	H3389	H0637	H2451	H5975	

> मैं बहुत धनवान और प्रसिद्ध हो गया। मुझसे पहले यरूशलेम में जो भी कोई रहता था, मैं उससे अधिक महान था। मेरी बुद्धि सदा मेरी सहायता किया करती थी।

10									
וְכֹל֙	אֲשֶׁ֣ר	שָׁאֲל֣וּ	עֵינַ֔י	לֹ֥א	אָצַ֖לְתִּי	מֵהֶ֑ם	לֹֽא־	מָנַ֨עְתִּי	אֶת־
और-सब-कुछ	जो	माँगा	मेरी-आँखों-ने	नहीं	मैंने-रोका	उनसे	नहीं-	मैंने-मना-किया	—
H3605		H7592		H3808	H0680	H1992	H3808	H4513	H0853

לִבִּ֜י	מִכָּל־	שִׂמְחָ֗ה	כִּֽי־	לִבִּ֤י	שָׂמֵ֙חַ֙	מִכָּל־	עֲמָלִ֔י	וְזֶֽה־	הָיָ֥ה
अपने-मन-को	किसी-भी-	आनन्द-से	क्योंकि-	मेरा-मन	आनन्दित-था	सब-	मेरे-परिश्रम-से	और-यही-	था
	H3605	H8057			H8056	H3605	H5999	H2088	H1961

חֶלְקִ֖י	מִכָּל־	עֲמָלִֽי׃
मेरा-भाग	सब-	मेरे-परिश्रम-से
	H3605	H5999

> मेरी आँखों ने जो कुछ देखा और चाहा उसे मैंने प्राप्त किया। मैं जो कुछ करता, मेरा मन सदा उससे प्रसन्न रहा करता और यह प्रसन्नता मेरे कठिन परिश्रम का प्रतिफल थीं।

11							
וּפָנִ֣יתִֽי	אֲנִ֗י	בְּכָל־	מַעֲשַׂי֙	שֶׁעָשׂ֣וּ	יָדַ֔י	וּבֶֽעָמָ֖ל	שֶׁעָמַ֣לְתִּי
और-मैंने-मुड़कर-देखा	मैंने	सब-	मेरे-कार्यों-को	जो-किए-थे	मेरे-हाथों-ने	और-परिश्रम-में	जो-मैंने-परिश्रम-किया
H6437	H0589	H3605	H4639		H3027	H5999	H5998

לַעֲשׂ֑וֹת	וְהִנֵּ֨ה	הַכֹּ֥ל	הֶ֙בֶל֙	וּרְע֣וּת	ר֔וּחַ	וְאֵ֥ין	יִתְר֖וֹן	תַּ֥חַת	הַשָּֽׁמֶשׁ׃
करने-में	और-देखो	सब-कुछ	व्यर्थता	और-वायु-को	पकड़ना	और-नहीं-है	लाभ	नीचे	सूर्य-के
	H2009	H3605	H1892	H7469	H7307	H0369	H3504	H8478	H8121

> किन्तु मैंने जो कुछ किया था जब उस पर दृष्टि डाली और अपने किये कठिन परिश्रम के बारे में विचार किया तो मुझे लगा यह सब समय की बर्बादी थी! यह ऐसा ही था जैसा वायु को पकड़ना। इस जीवन में हम जो कुछ श्रम करते हैं उस सबकुछ का उचित परिणाम हमें नहीं मिलता।

12

וּפָנִ֤יתִֽי	אֲנִי֙	לִרְא֣וֹת	חָכְמָ֔ה	וְהוֹלֵל֖וֹת	וְסִכְל֑וּת	כִּ֣י ׀	מֶ֣ה	הָאָדָ֗ם	שֶׁיָּבוֹא֙
और-मैंने-मुड़कर-देखा	मैंने	देखने-को	बुद्धि	और-पागलपन	और-मूर्खता	क्योंकि	क्या	मनुष्य	जो-आएगा
H6437	H0589	H7200	H2451	H1947			H4100	H0120	H0935

אַחֲרֵ֣י	הַמֶּ֔לֶךְ	אֵ֥ת	אֲשֶׁר־	כְּבָ֖ר	עָשֽׂוּהוּ׃
बाद-में	राजा-के	—	जो-	पहले-से	किया-है-उन्होंने
	H4428	H0853		H3528	

> जितना एक राजा कर सकता है, उससे अधिक कोई भी व्यक्ति नहीं कर सकता। तुम जो भी कुछ करना चाह सकते हो, वह सबकुछ कोई राजा अब तक कर भी चुका होगा। मेरी समझ में आ गया कि एक राजा तक जिन कामों को करता है, वे सब भी व्यर्थ हैं। सो मैंने फिर बुद्धिमान बनने, मूर्ख बनने और सनकीपन के कामों को करने के बारे में सोचना आरम्भ किया।

13

וְרָאִ֣יתִי	אָ֔נִי	שֶׁיֵּ֥שׁ	יִתְר֛וֹן	לַֽחָכְמָ֖ה	מִן־	הַסִּכְל֑וּת	כִּיתְר֥וֹן	הָא֖וֹר	מִן־	הַחֹֽשֶׁךְ׃
और-मैंने-देखा	मैंने	कि-है	लाभ	बुद्धि-को	से-	मूर्खता	जैसे-लाभ	प्रकाश-को	से-	अंधकार
H7200	H0589	H3426	H3504	H2451			H3504	H0216		H2822

> मैंने देखा कि बुद्धि मूर्खता से उसी प्रकार उत्तम है जिस प्रकार अँधेरे से प्रकाश उत्तम होता है।

14

הֶחָכָם֙	עֵינָ֣יו	בְּרֹאשׁ֔וֹ	וְהַכְּסִ֖יל	בַּחֹ֣שֶׁךְ	הוֹלֵ֑ךְ	וְיָדַ֤עְתִּֽי	גַם־	אָ֔נִי	שֶׁמִּקְרֶ֥ה
बुद्धिमान-के	आँखें	उसके-सिर-में	और-मूर्ख	अंधकार-में	चलता-है	और-मैंने-जाना	भी-	मैंने	कि-घटना
H2450			H3684	H2822	H1980	H3045	H1571	H0589	H4745

אֶחָ֖ד	יִקְרֶ֥ה	אֶת־	כֻּלָּֽם׃
एक	घटती-है	—	सबको
H0259		H0853	H3605

> यह वैसे ही है जैसे: एक बुद्धिमान व्यक्ति, वह कहाँ जा रहा है, उसे देखने के लिये अपनी बुद्धि का उपयोग, अपनी आँखों की तरह करता है। किन्तु एक मूर्ख व्यक्ति उस व्यक्ति के समान है जो अंधेरे में चल रहा है। किन्तु मैंने यह भी देखा कि मूर्ख और बुद्धिमान दोनों का अंत एक ही प्रकार से होता हैं। दोनों ही अंत में मृत्यु को प्राप्त करते हैं।

15

וְאָמַ֨רְתִּי	אֲנִ֜י	בְּלִבִּ֗י	כְּמִקְרֵ֤ה	הַכְּסִיל֙	גַּם־	אֲנִ֣י	יִקְרֵ֔נִי	וְלָ֧מָּה	חָכַ֛מְתִּי
और-मैंने-कहा	मैंने	अपने-मन-में	जैसी-घटना	मूर्ख-की	भी-	मुझे	घटेगी	और-क्यों	बुद्धिमान-हुआ
H0559	H0589		H4745	H3684	H1571	H0589		H4100	H2449

אֲנִ֖י	אָ֣ז	יוֹתֵ֑ר	וְדִבַּ֣רְתִּי	בְלִבִּ֔י	שֶׁגַּם־	זֶ֖ה	הָֽבֶל׃
मैं	तब	अधिक	और-मैंने-कहा	अपने-मन-में	कि-यह-भी-	यह	व्यर्थता
H0589		H3148	H1696		H1571	H2088	H1892

> अपने मन में मैंने सोचा, “किसी मूर्ख व्यक्ति के साथ जो घटता है वह मेरे साथ भी घटेगा सो इतना बुद्धिमान बनने के लिये इतना कठिन परिश्रम मैंने क्यों किया?” अपने आपसे मैंने कहा, “बुद्धिमान बनना भी बेकार है।”

16

כִּי֩	אֵ֨ין	זִכְר֧וֹן	לֶחָכָ֛ם	עִֽם־	הַכְּסִ֖יל	לְעוֹלָ֑ם	בְּשֶׁכְּבָ֞ר	הַיָּמִ֤ים	הַבָּאִים֙	הַכֹּ֣ל
क्योंकि	नहीं-है	स्मरण	बुद्धिमान-का	साथ-	मूर्ख-के	सदा	क्योंकि-पहले-से	दिनों-में	आने-वाले	सब-कुछ
	H0369	H2146	H2450		H3684	H5769	H3528	H3117	H0935	H3605

נִשְׁכָּ֔ח	וְאֵ֛יךְ	יָמ֥וּת	הֶחָכָ֖ם	עִֽם־	הַכְּסִֽיל׃
भुला-दिया-जाएगा	और-कैसे	मरता-है	बुद्धिमान	साथ-	मूर्ख-के
H7911		H4191	H2450		H3684

> बुद्धिमान व्यक्ति और मूर्ख व्यक्ति दोनों ही मर जायेंगे और लोग सदा के लिये न तो बुद्धिमान व्यक्ति को याद रखेंगे और न ही किसी मूर्ख व्यक्ति को। उन्होंने जो कुछ किया था, लोग उसे आगे चल कर भुला देंगे। इस प्रकार बुद्धिमान व्यक्ति और मूर्ख व्यक्ति वास्तव में एक जैसे ही हैं।

17

וְשָׂנֵ֙אתִי֙	אֶת־	הַֽחַיִּ֔ים	כִּ֣י	רַ֤ע	עָלַי֙	הַֽמַּעֲשֶׂ֔ה	שֶׁנַּעֲשָׂ֖ה	תַּ֣חַת	הַשָּׁ֑מֶשׁ
और-मैंने-घृणा-की	—	जीवन-से	क्योंकि	बुरा	मुझ-पर	कार्य	जो-किया-जाता-है	नीचे	सूर्य-के
H8130	H0853					H4639		H8478	H8121

כִּֽי־	הַכֹּ֥ל	הֶ֖בֶל	וּרְע֥וּת	רֽוּחַ׃
क्योंकि-	सब-कुछ	व्यर्थता	और-वायु-को	पकड़ना
	H3605	H1892	H7469	H7307

> इसके कारण मुझे जीवन से घृणा हो गई। इस विचार से मैं बहुत दुःखी हुआ कि इस जीवन में जो कुछ है सब व्यर्थ है। बिल्कुल वैसा ही जैसे वायु को पकड़ने की कोशिश करना।

18 וְשָׂנֵאתִי אֲנִי אֶת־כָּל־עֲמָלִי שֶׁאֲנִי עָמֵל תַּחַת הַשָּׁמֶשׁ

וְשָׂנֵאתִי	אֲנִי	אֶת־	כָּל־	עֲמָלִי	שֶׁאֲנִי	עָמֵל	תַּחַת	הַשָּׁמֶשׁ
और-मैंने-घृणा-की	मैंने	—	सब-	मेरे-परिश्रम-से	जो-मैं	परिश्रम-करता-हूँ	नीचे	सूर्य-के
	H0589	H0853	H3605	H5999	H0589		H8478	H8121

שֶׁאַנִּיחֶנּוּ לָאָדָם שֶׁיִּהְיֶה אַחֲרָי׃

שֶׁאַנִּיחֶנּוּ	לָאָדָם	שֶׁיִּהְיֶה	אַחֲרָי׃	
कि-मैं-छोड़ूँगा-उसे	मनुष्य-के-लिए	जो-होगा	मेरे-बाद	
H3240	H0120	H1961		

मैंने जो कठिन परिश्रम किया था, उससे घृणा करना आरम्भ कर दिया। मैंने देखा कि वे लोग जो मेरे बाद जीवित रहेंगे उन वस्तुओं को ले लेंगे जिनके लिये मैंने कठोर परिश्रम किया था। मैं अपनी उन वस्तुओं को अपने साथ नहीं ले जा सकूँगा।

19 וּמִי יוֹדֵעַ יִהְיֶה חָכָם אוֹ סָכָל וְיִשְׁלַט בְּכָל־עֲמָלִי

וּמִי	יוֹדֵעַ	יִהְיֶה	חָכָם	אוֹ	סָכָל	וְיִשְׁלַט	בְּכָל־	עֲמָלִי
और-कौन	जानता-है	होगा	बुद्धिमान	या	मूर्ख	और-वह-अधिकारी-होगा	सब-	मेरे-परिश्रम-पर
H4310	H3045	H1961	H2450		H5530	H7980	H3605	H5999

שֶׁעָמַלְתִּי וְשֶׁחָכַמְתִּי תַּחַת הַשָּׁמֶשׁ גַּם־זֶה הֶבֶל׃

שֶׁעָמַלְתִּי	וְשֶׁחָכַמְתִּי	תַּחַת	הַשָּׁמֶשׁ	גַּם־	זֶה	הֶבֶל׃
जो-मैंने-परिश्रम-किया	और-जो-मैं-बुद्धिमान-हुआ	नीचे	सूर्य-के	यह-भी-	यह	व्यर्थता
H5998	H2449	H8478	H8121	H1571	H2088	H1892

जिन वस्तुओं के लिये मैंने मन लगाकर कठिन परिश्रम किया था उन सभी वस्तुओं पर किसी दूसरे ही व्यक्ति का नियन्त्रण होगा और मैं तो यह भी नहीं जानता कि वह व्यक्ति बुद्धिमान होगा या मूर्ख। पर यह सब भी तो अर्थहीन ही है।

20 וְסַבּוֹתִי אֲנִי לְיַאֵשׁ אֶת־לִבִּי עַל כָּל־הֶעָמָל שֶׁעָמַלְתִּי תָּחַת

וְסַבּוֹתִי	אֲנִי	לְיַאֵשׁ	אֶת־	לִבִּי	עַל	כָּל־	הֶעָמָל	שֶׁעָמַלְתִּי	תָּחַת
और-मैं-मुड़ा	मैं	निराश-करने-को	—	अपने-मन-को	विषय-में	सब-	परिश्रम	जो-मैंने-परिश्रम-किया	नीचे
	H0589	H2976	H0853			H3605	H5999	H5998	H8478

הַשָּׁמֶשׁ׃

הַשָּׁמֶשׁ׃
सूर्य-के
H8121

इसलिए मैंने जो भी कठिन परिश्रम किया था, उस सब के विषय में मैं बहुत दुःखी हुआ।

21 כִּי־יֵשׁ אָדָם שֶׁעֲמָלוֹ בְּחָכְמָה וּבְדַעַת וּבְכִשְׁרוֹן וּלְאָדָם שֶׁלֹּא

כִּי־	יֵשׁ	אָדָם	שֶׁעֲמָלוֹ	בְּחָכְמָה	וּבְדַעַת	וּבְכִשְׁרוֹן	וּלְאָדָם	שֶׁלֹּא
क्योंकि-	है	मनुष्य	जिसका-परिश्रम	बुद्धि-में	और-ज्ञान-में	और-कुशलता-में	और-मनुष्य-को	जिसने-नहीं
	H3426	H0120	H5999	H2451	H1847	H3788	H0120	H3808

עָמַל־בּוֹ יִתְּנֶנּוּ חֶלְקּוֹ גַּם־זֶה הֶבֶל וְרָעָה רַבָּה׃

עָמַל־	בּוֹ	יִתְּנֶנּוּ	חֶלְקּוֹ	גַּם־	זֶה	הֶבֶל	וְרָעָה	רַבָּה׃
परिश्रम-किया-	उसमें	वह-देगा-उसे	उसका-भाग	यह-भी-	यह	व्यर्थता	और-बुराई	बड़ी
H5998		H5414		H1571	H2088	H1892		

एक व्यक्ति अपनी बुद्धि, अपने ज्ञान और अपनी चतुराई का प्रयोग करते हुए कठिन परिश्रम कर सकता हैं। किन्तु वह व्यक्ति तो मर जायेगा और जिन वस्तुओं के लिये उस व्यक्ति ने कठिन परिश्रम किया था, वे किसी दूसरे ही व्यक्ति को मिल जायेंगी। उन व्यक्तियों ने वस्तुओं के लिये कोई काम तो नहीं किया था, किन्तु उन्हें वह सभी कुछ हासिल हो जायेगा। इससे मुझे बहुत दुःख होता है। यह न्यायपूर्ण तो नहीं है। यह तो विवेकपूर्ण नहीं है।

22 כִּי מֶה־הֹוֶה לָאָדָם בְּכָל־עֲמָלוֹ וּבְרַעְיוֹן לִבּוֹ שֶׁהוּא

כִּי	מֶה־	הֹוֶה	לָאָדָם	בְּכָל־	עֲמָלוֹ	וּבְרַעְיוֹן	לִבּוֹ	שֶׁהוּא
क्योंकि	क्या-	होता-है	मनुष्य-को	सब-	उसके-परिश्रम-में	और-प्रयास-में	उसके-मन-के	जो-वह
	H4100		H0120	H3605	H5999	H7475		H1931

עָמֵל תָּחַת הַשָּׁמֶשׁ׃

עָמֵל	תָּחַת	הַשָּׁמֶשׁ׃
परिश्रम-करता-है	नीचे	सूर्य-के
	H8478	H8121

अपने जीवन में सारे परिश्रम और संघर्ष के बाद आखिर एक मनुष्य को वास्तव में क्या मिलता है?

23 כִּי כָל־יָמָיו מַכְאֹבִים וְכַעַס עִנְיָנוֹ גַּם־בַּלַּיְלָה לִבּוֹ לֹא־שָׁכָב גַּם־זֶה הֶבֶל הוּא׃

כִּי	כָל־	יָמָיו	מַכְאֹבִים	וְכַעַס	עִנְיָנוֹ	גַּם־	בַּלַּיְלָה	לִבּוֹ	לֹא־	שָׁכָב
क्योंकि	सब-	उसके-दिन	दुख	और-खेद	उसका-काम	भी-	रात-में	उसका-मन	नहीं-	सोता
	H3605	H3117	H4341		H6045	H1571	H3915		H3808	H7901

גַּם־זֶה הֶבֶל הוּא׃

גַּם־	זֶה	הֶבֶל	הוּא׃
यह-भी-	यह	व्यर्थता	है
H1571	H2088	H1892	H1931

> अपने सारे जीवन में वह कठिन परिश्रम करता रहा किन्तु पीड़ा और निराशा के अतिरिक्त उसके हाथ कुछ भी नहीं लगा। रात के समय भी मनुष्य का मन विश्राम नहीं पाता। यह सब भी अर्थहीन ही है।

24

בַּעֲמָלֹו	טֹוב	נַפְשֹׁו	אֶת־	וְהֶרְאָה	וְשָׁתָה	שֶׁיֹּאכַל	בָּאָדָם	טֹוב	אֵין־
उसके-परिश्रम-में	भलाई	अपने-प्राण-को	—	और-दिखाए	और-पिए	कि-वह-खाए	मनुष्य-में	भलाई	नहीं-है-
H5999		H5315	H0853	H7200	H8354	H0398	H0120		H0369

הִיא׃	הָאֱלֹהִים	מִיַּד	כִּי	אֲנִי	רָאִיתִי	זֹה	גַּם־
है-यह	परमेश्वर-के	हाथ-से	कि	मैंने	मैंने-देखा	यह	यह-भी-
H1931	H0430	H3027		H0589	H7200	H2090	H1571

> जीवन का जितना आनन्द मैंने लिया है क्या कोई भी ऐसा व्यक्ति और है जिसने मुझे से अधिक जीवन का आनन्द लेने का प्रयास किया हो? नहीं! मुझे जो ज्ञान हुआ है वह यह है: कोई व्यक्ति जो अच्छे से अच्छा कर सकता है वह है खाना, पीना और उस कर्म का आनन्द लेना जो उसे करना चाहिये। मैंने यह भी समझा है कि यह सब कुछ परमेश्वर से ही प्राप्त होता है।

25

מִמֶּנִּי׃	חוּץ	יָחוּשׁ	וּמִי	יֹאכַל	מִי	כִּי
मुझसे	बाहर	आनन्द-लेगा	और-कौन	खाएगा	कौन	क्योंकि
	H2351		H4310	H0398	H4310	

> जीवन का जितना आनन्द मैंने लिया है क्या कोई भी ऐसा व्यक्ति और है जिसने मुझे से अधिक जीवन का आनन्द लेने का प्रयास किया हो? नहीं! मुझे जो ज्ञान हुआ है वह यह है: कोई व्यक्ति जो अच्छे से अच्छा कर सकता है वह है खाना, पीना और उस कर्म का आनन्द लेना जो उसे करना चाहिये। मैंने यह भी समझा है कि यह सब कुछ परमेश्वर से ही प्राप्त होता है।

26

נָתַן	וְלַחוֹטֶא	וְשִׂמְחָה	וְדַעַת	חָכְמָה	נָתַן	לְפָנָיו	שֶׁטֹּוב	לְאָדָם	כִּי
दिया-है	और-पापी-को	और-आनन्द	और-ज्ञान	बुद्धि	दिया-है	उसके-सामने	जो-भला-है	मनुष्य-को	क्योंकि
H5414	H2398	H8057	H1847	H2451	H5414	H6440		H0120	

הֶבֶל	זֶה	גַּם־	הָאֱלֹהִים	לִפְנֵי	לְטוֹב	לָתֵת	וְלִכְנוֹס	לְאֱסֹף	עִנְיָן
व्यर्थता	यह	यह-भी-	परमेश्वर-के	सामने	भले-को	देने-को	और-जमा-करने-का	इकट्ठा-करने-का	काम
H1892	H2088	H1571	H0430	H6440		H5414	H3664	H0622	H6045

רוּחַ׃	וּרְעוּת
पकड़ना	और-वायु-को
H7307	H7469

> यदि कोई व्यक्ति परमेश्वर को प्रसन्न करता है तो परमेश्वर उसे बुद्धि, ज्ञान और आनन्द प्रदान करता है। किन्तु वह व्यक्ति जो उसे अप्रसन्न करता है, वह तो बस वस्तुओं के संचय और उन्हें ढोने का ही काम करता रहेगा। परमेश्वर बुरे व्यक्तियों से लेकर अच्छे व्यक्तियों को देता रहता है। इस प्रकार यह समग्र कर्म व्यर्थ है। यह वैसा ही है जैसे वायु को पकड़ने का प्रयत्न करना।